शोध-ऋतु

Shodh-Rityu तिमाही शोध–पत्रिका
PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE- webinar special VOLUME ISSN-2454-6283 21 Sept., 2021
IMPACT FACTOR - (IIJIF-7.312) SJIF-6.586, IIFS-4.125,
AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सम्पादक
डॉ.सुनील जाधव

तकनीकी सम्पादक
श्री.अनिल जाधव

वेबिनार अतिथि सम्पादक
डॉ.मुखत्यार शेख
डॉ.संतोषकुमार यशवंतकार

लोकमत समाचार

'हिंदी भाषा की दशा और दिशा' पर संगोष्ठी आज

राष्ट्रीय हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम

बीड़। 20 सितंबर। लोक सेवा

राष्ट्रीय हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में 'हिंदी भाषा की दशा और दिशा' विषय पर मंगलवार को एक दिवसीय ई-राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया है.

विश्व हिंदी संगठन नई दिल्ली, कला महाविद्यालय, बिडकिन और कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, शिवाजीनगर, गढ़ी (जिला बीड़) के संयुक्त तत्वावधान में 21 सितंबर को अपराह्न 4 बजे आयोजित इस एक दिवसीय ई-राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुख्य वक्ता हिंदी विभागाध्यक्ष सरस्वती संगीत कला महाविद्यालय लातूर व विश्व हिंदी संगठन नई दिल्ली के सचिव प्रा संतोष कुलकर्णी तथा प्रमुख अतिथि श्री पूर्णप्रज्ञ संध्या महाविद्यालय उडुपी, कर्नाटक की प्रधानाचार्य एवं मुख्य अतिथि के रूप में डॉ सुकन्या मेरी जे आमंत्रित किए गए हैं. इस संगोष्ठी के स्वागत अध्यक्ष प्रधानाचार्य डॉ नितिन आहेर और अध्यक्ष प्रधानाचार्य डॉ विश्वास कदम उपस्थित रहेंगे. इस संगोष्ठी में सहभागिता करने की अपील संयोजक डॉ संतोष यशवंतकर व डॉ मुख्तार शेख ने की है.

गढी येथे हिंदी राष्ट्रीय वेबिनार

गेवराई/ प्रतिनिधी : जयभवानी महाविद्यालयात, शिवाजीनगर, गढी येथे हिंदी राष्ट्रीय वेबिनारचे आयोजन करण्यात आले होते.

गढी येथील महाविद्यालयामध्ये मंगळवार दि.२१ सप्टेंबर रोजी महाविद्यालयाचा हिंदी विभाग, अंतर्गत गुणवत्तासुधार समिती, विश्व हिंदी संगठण नई, दिल्ली यांच्या संयुक्त विद्यमाने एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबिनारचे आयोजन करण्यात आल्याची माहिती महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. विश्वास कदम यांनी दिली.

हिंदी भाषा की दशा और दिशा, या विषयाला अनुसरून आयोजीत करण्यात आलेले हे जयभवानी शिक्षण प्रसारक मंडळाचे कला महाविद्यालयाचे प्राचार्य विश्वास कदम यांचे अध्यक्षतेखाली दुपारी ४ ते ७ या वेळेत संपन्न झाले. वेबिनारचे उद्घाटन कर्नाटक येथिल पूर्णप्रज्ञ संध्या महाविद्यालयाच्या प्राचार्या डॉ.सुकन्या मेरी जे. यांचे हस्ते झाले.

हिंदी भाषा संपर्क भाषा म्हणून वेगाने विकसित होत आहे -डॉ.संतोष कुलकर्णी

जाहीर प्रगटन

जाहीर प्रगटन

'हिंदी भाषेची दशा आणि दिशा' या विषयावर वेबिनार संपन्न

बिडकीन ▪ स्वातंत्र्याचा अमृत महोत्सव आणि देशाला स्वातंत्र्य मिळाल्यानंतर ७५ वर्ष पूर्ण झाले. दि.१४ हिंदी दिवस पंधरवड्याच्या निमित्ताने, एकता शिक्षण प्रसारक मंडळ संचालित, कला महाविद्यालय, बिडकीन आणि जयभवानी शिक्षण प्रसारक मंडळ संचालित, कला आणि विज्ञान महाविद्यालय, शिवाजीनगर, गढी आणि विश्व हिंदी संगठन, नवी दिल्ली यांच्या संयुक्त विद्यमाने, 'हिंदी भाषेची दशा आणि दिशा'. या विषयावर हा कार्यक्रम दि.२१ रोजी सायंकाळी आभासी स्वरूपात आयोजित करण्यात आला. या एक दिवसीय ई-राष्ट्रीय चर्चासत्राचे प्रमुख अतिथी म्हणून कर्नाटकातील उडुपी येथील पूर्णप्रज्ञ संध्या महाविद्यालयाच्या डॉ.सुकन्या मेरी जे.या उपस्थित होत्या. प्रमुख वक्ते म्हणून विश्व हिंदी संगठनेचे सचिव प्रा.डॉ.संतोष कुलकर्णी यांना आमंत्रित केले होते. या एक दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवादाचे स्वागताध्यक्ष, प्राचार्य डॉ.नितीन आहेर यांनी हिंदी भाषेच्या उज्ज्वल भविष्यासाठी शुभेच्छा देत हिंदी प्रेमींना हिंदी दिवसाच्या निमित्ताने हिंदी पंधरवड्यासाठी शुभेच्छा दिल्या.

लोकमत समाचार

सकाळ

हिंदी भाषा संपर्काचीच नव्हे तर श्रम, संघर्षाची भाषा : कुलकर्णी

संगोष्ठी ● हिंदी पखवाड़ा अंतर्गत ऑनलाइन कार्यक्रम में डॉ कुलकर्णी ने कहा

हिंदी का विकास करना हम सबकी जवाबदेही

बीड़। 22 सितंबर। लोक सेवा

हिंदी भाषा का विकास करना हम सबकी जवाबदेही है. सभी एकजुटता से प्रयास करें तो हिंदी को उसकी वास्तविक जगह मिलेगी. यह बात सरस्वती संगीत कला महाविद्यालय लातूर के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रा संतोष कुलकर्णी ने संगोष्ठी में प्रमुख वक्ता के रूप में कही.

एकता शिक्षण प्रसारक मंडल द्वारा संचालित कला महाविद्यालय बिडकिन व जयभवानी शिक्षण प्रसारक मंडल द्वारा संचालित कला व विज्ञान महाविद्यालय गढ़ी तथा विश्व हिंदी संगठन नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में 'हिंदी भाषा की दशा और दिशा' विषय पर 21 सितंबर को आभासी राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन ऑनलाइन किया गया था. प्रमुख अतिथि श्री पूर्णप्रज्ञ संध्या महाविद्यालय उडुपी कर्नाटक के डॉ सुकन्या मेरी जे ने कहा कि 21वीं सदी में कोई भी भाषा ऐसी नहीं है, जिसको चुनौतियों का सामना नहीं करना पड़ रहा. इस पर खासतौर से ध्यान देना चाहिए. संगोष्ठी के स्वागत अध्यक्ष प्रधानाचार्य डॉ नितिन आहेर ने हिंदी भाषा की महिमा बयान की. राजस्थान कोटा की डॉ कविता मीणा ने कहा कि राजभाषा हिंदी का प्रयोग व्यावहारिक और दैनिक जीवन में निरंतर होना चाहिए.

अध्यक्ष प्रधानाचार्य डॉ विश्वास कदम ने कहा कि आज के दौर में वही भाषाएं जिंदा रहेंगी, जो अपने आप को बदलते हुए इलेक्ट्रॉनिक और तकनीकी पटल के साथ जुड़ने की क्षमता रखती है. प्रस्तावना संयोजक प्रा मुख्तार शेख ने रखी. अतिथि परिचय पूजा मुट्ठे और प्रा मोहसिन शेख ने किया. संचालन संयोजक प्रा संतोषकुमार यशवंतकर ने किया. आभार प्रदर्शन प्रा हीरा पोटकुले ने माना.

बीड़ जिले के गढ़ी में मंगलवार को एक दिवसीय राष्ट्रीय आभासी संगोष्ठी में विचार रखते हुए वक्ता.

हिंदी भाषा संपर्क भाषा म्हणून वेगाने विकसित होत आहे -डॉ.संतोष कुलकर्णी

जाहीर प्रगटन

जाहीर प्रगटन

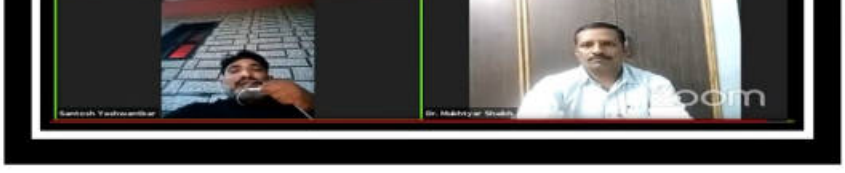

–डॉ.अशोक अभिषेक.....50
17.हिंदी के विकास में हिंदी सेवी व्यक्ति और संस्थाओं का योगदान.....53
–प्रो.अशोक मर्डे.....53
18.हिन्दी भाषा का प्रचार–प्रसार : व्यक्ति और संस्थाएं.....55
–डॉ. कृष्ण बिहारी रॉय.....55
19.भाषा की सामाजिक प्रासंगिकता.....57
–Dr. Pawan Kumar.....57
20.विज्ञापन जगत और हिंदी.....60
–डॉ.शेख.बेनज़ीर.....60
21.हिंदी भाषा व देवनागरी लिपि का विकास.....63
–डॉ0 सुधीर कुमार विश्वकर्मा.....63
22.स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी भाषा का योगदान.....68
–डॉ.मीना शर्मा.....68
23.राष्ट्रभाषा हिंदी का स्वरुप, समस्याएँ और समाधान.....70
–डॉ.शेख मोहसीन शेख रशीद.....70
24.स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी भाषा.....74
–डॉ.प्रेम प्रकाश शर्मा.....74
25.भाषा का प्रयोजनमूलक स्वरूप और हिन्दी-.....76
Dr.ShobhanaKokkadan,Dr.B.Anirudhan.....76
26.वैश्वीकरण के दौर में हिंदी भाषा की दिशा एंव दशा.....79
–डॉ. गायकवाड शितल माधवराव.....79
27.राजभाषा हिन्दी.....81
–हरी राम,.....81
28.सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी.....82
–प्रा.हिरा तुकाराम पोटकुले.....82
29.हिन्दी की चुनौतियाँ व संभावनाएँ.....84
–जयवीर सिंह.....84
30.हिन्दी भाषा का विकास.....87
–डॉ.महेन्द्रसिंह अजितसिंह पवार.....87
31.भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी भाषा.....91
–श्रीमती.मंगला जटगोंडा.....91
32.हिंदी भाषा में रोजगार की संभावनाएँ.....96
–डॉ.मनिषा गंगाराम मुगळीकर.....96
33.स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी भाषा का योगदान.....99

ISSN-2454-6283 PEER Reviewed JOURNAL

पहुंच सकती है। जब तक भारत में भारतीय भाषाओं को समुचित प्रतिष्ठा नहीं दी जाती तब तक राष्ट्रीय अस्मिता और देशभक्ति की बातें कोरी बकवास ही मानी जाएगी। भारतीय भाषाएं अंग्रेजी का स्थान लेaa, इसके लिए आवश्यक है कि सभी विद्यालय, महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय का शिक्षण माध्यम क्षेत्रीय भाषाएं बनाई जाए तथा हिंदी को एकमात्र संपर्क भाषा के रूप में विकसित किया जाए। आजादी से पहले अंग्रेज लोग जब भारत में अपना व्यापार शुरू करने के लिए आए तो उन्होंने भारत देश की भाषा हिंदी भाषा सीखी और उस सीखी हुई भाषा का भारत के लोगों में तोड़ मरोड़ कर हिंदी भाषा के स्थान पर अंग्रेजी भाषा को प्रचलित कर दिया, उसके बाद हिंदी भाषा भारत में रहते हुए भी भारतीयों के मन से दूर होती चली गए, जिसके कारण हिंदी भाषा कभी भी देसी भाषा नहीं रहे। आजादी के बाद इतने बरसों से भी अधिक होने के बावजूद भी हिंदी भाषा राजभाषा सिर्फ कागजों में ही सिमट कर रह चुकी है। हिंदी भाषा लोगों के दिलों की मातृभाषा है लेकिन फिर भी इसका प्रचलन बहुत कम राज्यों में इसको देखने का मिलता है, चाहे हम उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम की दिशा में भी चले जाएं , हिंदी से जुड़े हुए लोग और हिंदी से प्रेम करने वाले लोग हमें स्वभाविक रूप से मिल ही जाते हैं।

निष्कर्ष – जिस आजादी को प्राप्त करने के लिए हम सब मिलकर अंग्रेजी शासन के खिलाफ एकजुट होकर चाहे वह हिंदू हो , सिक्ख हो, मराठी हो , गुजराती हो हमने अंग्रेजों को भारत देश से बाहर का रास्ता दिखाया, जिससे एक नया भारत हमारे सामने आया लेकिन अभी उस भारत में अंग्रेजी शासन तो छोड़ कर चले गए लेकिन पीछे अंग्रेजी भाषा की विरासत को भारत में ही रह गई। आजादी के बाद भी भारत में अंग्रेजी का प्रचलन रुका नहीं, एक बार फिर हमें मिलकर संपूर्ण विश्व में हिंदी का प्रचार प्रचलन करना होगा जिससे कि हिंदी न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी हिंदी बोली जाए, वह सिखाई जाए।

संदर्भ सूची – 1.श्री शंकर दयाल सिंह, राजभाषा हिंदी संरचना और व्यवहार, हिंदी राष्ट्रभाषा राजभाषा जन भाषा 2016 2.अमित शाह जी का वक्तव्य एन डी टीवी पर प्रसारित हिंदी दिवस राष्ट्रभाषा हिंदी 2016, 14 सितंबर 3.विश्वभाषा हिंदी भारत में ही उपेक्षित, पृष्ठ 38

28.सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी

–प्रा.हिरा तुकाराम पोटकुले
हिंदी विभाग,कला एवं विज्ञान महाविद्यालय शिवाजीनगर, गढ़ी

आज का युग तकनीकी क्रांति का युग है। परिणाम स्वरूप सूचना प्रौद्योगिकी ने पूरे भूमंडल को समेट कर छोटा बना दिया है। सूचना प्रौद्योगिकी एक सर्व तंत्र है जो तकनीकी उपकरणों के सहारे सूचनाओं का संकलन एवं संप्रेषण करता है। सूचना प्रोद्योगिकी में सूचना संग्रह,ऑकडों की प्राप्ति, सुरक्षा, परिवर्तन, आदान–प्रदान, अध्ययन, डिजाइन आदि कार्यों और इन कार्यों के निष्पादन के लिए महत्वपूर्ण और आवश्यक कंप्यूटर हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर से संबंधित कार्य किए जाते हैं सूचना प्रौद्योगिकी कंप्यूटर पर आधारित सूचना प्रणाली का महत्वपूर्ण आधार है। सूचना प्रौद्योगिकी वर्तमान समय में वाणिज्य, व्यापार और भाषा के विकास का अभिन्न अंग है। सूचना प्रौद्योगिकी सेवा अर्थतंत्र का आधार होने के कारण वह पिछड़े देशों के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए सम्यक तकनीकी है। सूचना प्रौद्योगिकी की सहायता से प्रशासन और सरकार में पारदर्शिता लाने में भ्रष्टाचार को कम करने में और सरकारी नीतियों को असरदार बनाया जा सकता है।

भाषा मनुष्य के जीवन का अभिन्न अंग है। भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होने के कारण संप्रेषण के द्वारा ही मनुष्य सूचनाओं का आदान प्रदान एवं उसे संग्रहित करता है। भाषा के कारण ही सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक विभिन्नता होने पर भी माननीय समूहों का आपस में अच्छा संपर्क बन जाता है। हम देखते आ रहे हैं कि भाषा केवल मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा करती थी लेकिन सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में भाषा की जिम्मेदारी, उसकी भूमिका बदलती हुई दिखाई दे रही है। अब भाषा को मशीन कंप्यूटर की मांगों को पूरा करना पड़ रहा है यह जिम्मेदारी हिंदी भाषा सशक्त रूप से निभा रही है।

वर्तमान समय में हिंदी भाषा देश की सीमाओं को लांघ कर विदेशों में पहुंच रहे ही हैं। हमारी मानसिक स्वतंत्रता के लिए हमें अंग्रेजी का सहारा छोड़कर अपनी भाषा हिंदी को बढ़ाना आवश्यक है। भाषा की इस विकास प्रक्रिया में सूचना प्रौद्योगिकी का योगदान महत्वपूर्ण है। सूचना प्रौद्योगिकी में प्रसारण, संचार, रेडियो, टेलीविजन, माइक्रोफोन, दूरभाष वीडियो, विज्ञापन, कंप्यूटर, एस एम एस एम एम एस, इंटरनेट आदि आते हैं जिनकी हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का आना मानव जीवन की विकास यात्रा में एक गौरवशाली पडाव रहा है।

आज हम देखते हैं कि मानव जीवन से जुड़े सामाजिक, आर्थिक और परिवारिक हर पहलू का व्यवसायीकरण हो रहा है। आजज़हर अविष्कार कंप्यूटर तकनीक पर आश्रित है। हिंदी भाषा को समस्त क्षेत्रों में अद्यतन ज्ञान के पठन–पाठन, संभाषण, संप्रेषण का सशक्त माध्यम बनाने और हिंदी के सर्वांगीण विकास की उज्जवल निर्मल धारा सूचना के माध्यम से ही प्रवाहित की जा सकती हैं। ''आकाशवाणी की केंद्रीय फीचर इकाई ने वर्ष 1998में भारत की स्वतंत्रता के 50 वर्ष पर महिलाओं व बच्चों के लिए अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, परिवार कल्याण न्यायालय, फूलों का निर्यात, वंदे मातरम् आदि।साथ ही राष्ट्रीय स्तर में 22 महत्वपूर्ण फीचर भी प्रसारित किए। खेती–बाड़ी से संबंधित फार्म ब्रॉडकास्टिंग परिवार कल्याण, संगीत, खेल, नाटक आदि कार्यक्रमों का भी प्रसारण हिंदी में किया जाता रहा। संचार क्रांति के प्रभाव में आकाशवाणी को भी प्रभावित किया। नई तकनीकी का समाचार कक्ष में प्रवेश ई–मेल की शुरुआत तथा गीत और संगीत तथा फाने द्वारा फरमाइश का चौनल का चलन भी आकाशवाणी की लोकप्रियता बढ़ाता है।'' (१) जनसंचार के माध्यमों ने हिंदी को व्यापक भूभाग पर फैलाया साथ ही संचार माध्यमों के कारण ही हिंदी बोलने वालों की संख्या दिन–ब–दिन बढ़ रही है।''टेलीविजन का विकास स्वतंत्र भारत में हुआ। प्रसारण माध्यमों में टेलीविजन ही ऐसा प्रसारण माध्यम है जिसका भारत में उद्‌भव एवं विकास स्वतंत्रता के बाद हुआ। भारत में संविधान में वाक् और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता मौलिक अधिकार धारा 19 17(क) द्वारा प्रदान किया गया। 1959 में टीवी कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ जो हिंदी में प्रस्तुत हुआ।'' (२) दूरदर्शन हिंदी के प्रचार–प्रसार करने में सशक्त माध्यम सिद्ध हुआ है। आज टेलीविजन पर लगभग 200 से भी अधिक चौनल है जिनमें अधिकांश हिंदी के है। टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले हिंदी धारावाहिक विश्व स्तर पर लोकप्रिय होते दिखाई दे रहे हैं।

वैश्विक पहुंच रखने वाला महत्वपूर्ण जनसंचार माध्यम इंटरनेट है। यह ऐसा माध्यम है जिस पर प्रयुक्त होने वाली भाषा को विश्व के सभी लोगों द्वारा पढा और देखा जाना संभव है। वर्तमान समय में हिंदी भाषा इंटरनेट पर पहुंच चुकीं हैं। इंटरनेट अपने आप में सूचना एवं जनसंचार का प्रभावी संजाल है जो संपूर्ण विश्व की व्यवस्था को एक साथ एक रूप में उपलब्ध रहने की स्थिति में रहता है, ऐसे संजाल में हिंदी भाषा को स्थान मिलना वर्तमान स्थिति में महत्वपूर्ण बात है। सूचना प्रौद्योगिकी के चलते हिंदी राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुंच गई है।संचार माध्यम के आधार पर हिंदी के नए–नए रूप बन रहे हैं।इन्हीं माध्यम के अनुसार हिंदी में परिवर्तनशिलता आ गई है। माध्यमों को प्रभावी रूप में अभिव्यक्त करने के लिए हिंदी भाषा में कुशलता को प्राप्त कर लिया है।

सूचना प्रौद्योगिकी का इंटरनेट ऐसा माध्यम है जिसमें समस्त संसार को अपने वश में कर लिया है। इंटरनेट मानव के लिए अल्लादीन का चिराग है जो मनुष्य के अनुसार उचित समय पर किसी भी रूप में उचित जानकारी प्रदान कर सकता है। इंटरनेट ने एक विशाल श्रृंखला निर्माण की है जहां पर हमें हिंदी सूचनाएं तथा मनोरंजन के साथ–साथ ज्ञान– विज्ञान, हिंदी समाचार, पत्र –पत्रिकाओं, रेडियो, और दूरदर्शन के हिंदी कार्यक्रमों को भी इंटरनेट वेबसाइट पर देखा जा सकता है। ज्ञान विज्ञान से जुड़ी संस्थाओं की जानकारी, उनके कार्यक्रमों को जो लोग सीधे रूप से नहीं जुड़ पाते वह इंटरनेट के माध्यम से जुड़ जाते हैं।

आज किसी भी विषय से संबंधित कोई भी जानकारी संबंधित व्यक्ति के इंटरनेट के माध्यम से प्राप्त करता है। इंटरनेट पर हिंदी वेबसाइटे हिंदी भाषा का वैश्विक स्तर पर प्रचार– प्रसार करने का कार्य कर रही है। हिंदी की बढ़ती वेबसाइट इस ओर संकेत कर रही है कि हिंदी भाषा को विश्व स्तर पर कितनी अधिक मांग है। कंप्यूटर तकनीक के क्षेत्र में हो रहे तीव्रगामी विकास के कारण आज जटिल से जटिल कंप्युटर संबंधी कार्यों में हिंदी का व्यापक प्रयोग हो रहा है, यह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता का संकेत है।

अतः हिंदी भाषा को जनसामान्य तक ज्ञान–विज्ञान और सूचना पहुंचाने की दृष्टि से सहज, सरल और प्रेषणीय बनाने की जोरदार पहल चल रही है अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य को देखते हुए यह स्पष्ट कि सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यमों के सहारे विश्व के किसी भी कोने में से, किसी भी स्थान से सीखा जा सकता है। हिंदी भाषा का योगदान है। सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में संचार माध्यमों के आधार पर हिंदी के जो नए रूप, हिंदी की परिवर्तनशीलता के कारण ही हिंदी आज वैश्विक स्तर पर पहुंचने में कामयाब रही है। हिंदी की विकास यात्रा को देखते हुए स्पष्ट है कि हिंदी केवल राष्ट्रभाषा ही नहीं बल्कि विश्व भाषा बनने में सूचना प्रौद्योगिकी का महत्वपूर्ण है।

संदर्भ सूची:1)डॉ.आशा गुप्ता हिंदी पत्रकारिता की विकास यात्रा,पृ.113 2)डॉ. आशा गुप्ता हिंदी पत्रकारिता की विकास यात्रा,पृ.114 3)डॉ.लक्ष्मीकांत पांडे, डॉ, प्रमिला अवस्थी–प्रयोजनमूलक हिंदी